डा सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
स्नातक डिग्री १पत्र १

निबन्धकार के रूप में रामचन्द्र शुक्ल

किसी भाषा का बड़ा-से-बड़ा निबन्धकार भी हिन्दी साहित्य के जिस निबन्धकार का नाम आते ही श्रद्धा से सिर झुका लेता है, उस निबन्धकार का नाम है रामचन्द्र शुक्ल। आचार्य शुक्ल वस्तुत: युग-प्रवर्तक निबन्धकार रहे हैं और हिन्दी-निबंध साहित्य में उनका योगदान एवं स्थान ऐतिहासिक महत्व का रहा है।

हिन्दी साहित्येतिहास के अनुसार निबन्ध-लेखन का प्रारम्भ भारतेन्दु-युग से मान्य है। आधुनिक हिन्दी के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अतिरिक्त इस युग के दो अन्य प्रमुख निबन्धकार रहे हैं बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र। भारतेन्दु-युग के बाद आता है द्विवेदी-युग। इस युग के निबन्धकारों में स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त अन्य प्रमुख निबन्धकार रहे हैं: बालमुकुन्द गुप्त, माधव प्रसाद मिश्र, मिश्र-बन्धु, सरदार पूर्णसिंह, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', श्यामसुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा आदि। द्विवेदी युग के बाद आता है शुक्ल-युग। काल की दृष्टि से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्विवेदी-युग में ही आते हैं, परन्तु उनकी प्रतिभा का चरम विकास परवर्ती युग में दिखाई देता है और निबन्ध के क्षेत्र में वे नवीन युग के प्रवर्तक रहे हैं, इसलिए द्विवेदी-युग के परवर्ती युग को हिन्दी-निबन्ध साहित्य के इतिहास में 'शुक्ल-युग' मानना अधिक समीचीन है।

हिन्दी-निबन्ध साहित्य के विकास में शुक्लजी का योगदान वस्तुत: ऐतिहासिक महत्व का है। उन्होंने हिन्दी-निबन्ध साहित्य को अपने जिन निबन्धों से समृद्ध बनाया है, वे 'चिन्तामणि'

में संगृहीत हैं। इस संग्रह में निबन्धों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है — भाव या मनोविकार-सम्बन्धी निबन्ध और समीक्षात्मक निबन्ध।

भाव या मनोविकार-सम्बन्धी निबन्ध —
करुणा, घृणा, ईर्ष्या, भय, श्रद्धा-भक्ति, उत्साह, लोभ और प्रीति, लज्जा और ग्लानि, क्रोध आदि।

समीक्षात्मक निबन्ध — इसकी दो कोटियाँ हैं — सैद्धान्तिक समीक्षा और व्यावहारिक समीक्षा।

सैद्धान्तिक समीक्षा-सम्बन्धी निबन्ध :—
कविता क्या है, काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था, साधारणीकरण और व्यक्ति-वैचित्र्यवाद, रसात्मक बोध के विविध रूप आदि।

व्यावहारिक समीक्षा-सम्बन्धी निबन्ध —
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, तुलसी का भक्तिमार्ग तथा मानस की धर्मभूमि।